लुबा

बर्गन-बेल्सेन यातना शिविर की परी

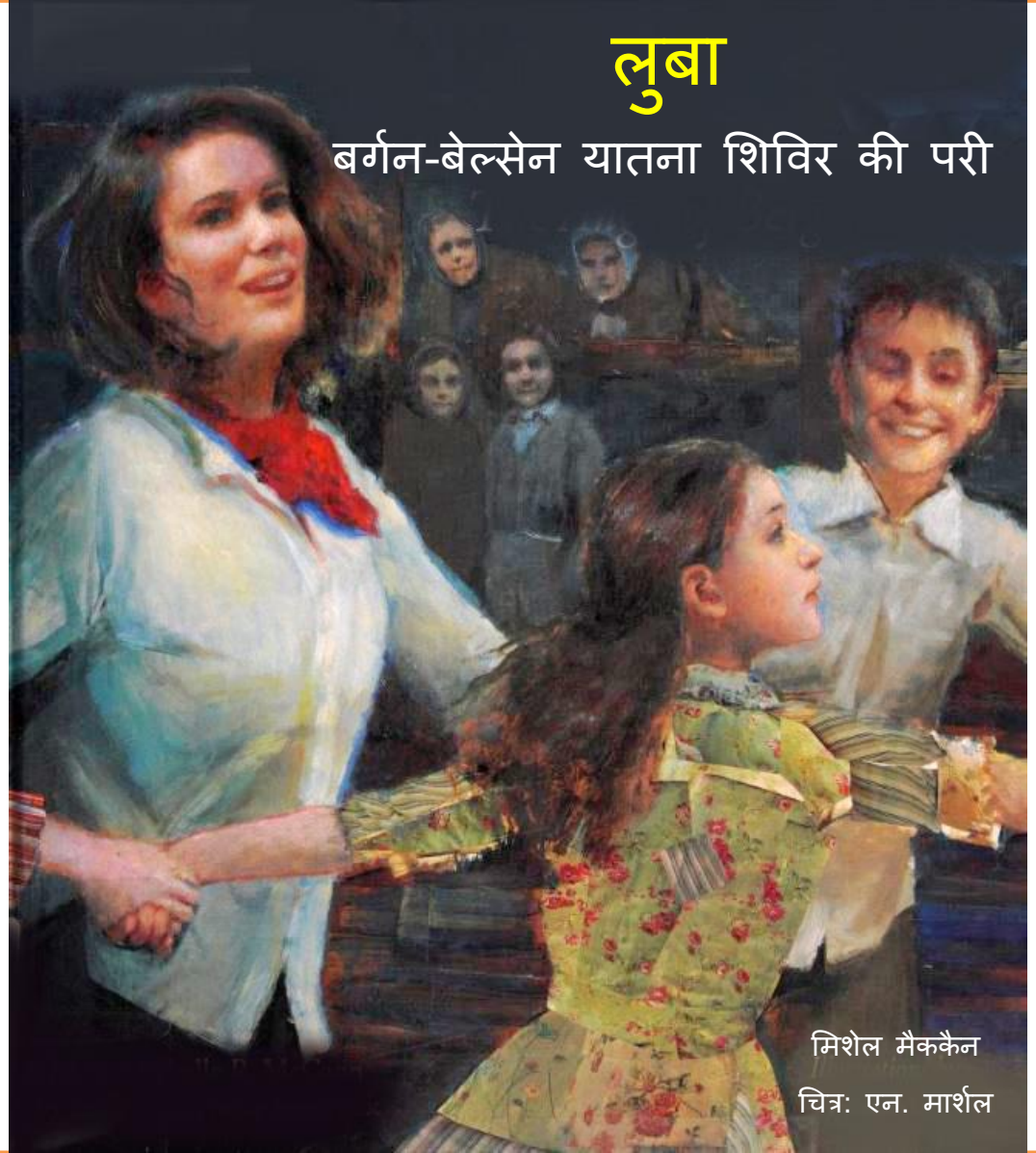

मिशेल मैककैन

चित्र: एन. मार्शल

लुबा

बर्गन-बेल्सेन यातना शिविर की परी

मिशेल मैककैन

चित्र: एन. मार्शल

मैं अभी भी जीवित क्यों हूँ? मुझे क्यों बख्शा गया?

1944 में दिसंबर की एक ठंडी रात, लुबा ट्रिस्ज़िंस्का के सवालों का जवाब तब मिला जब उसे बर्गन-बेल्सेन में यातना शिविर के पीछे चौवन बच्चे मिले. लुबा इन बच्चों को बचाने के परिणाम को अच्छी तरह जानती थी. अगर नाजियों ने उसे पकड़ लिया, तो वो निश्चित तौर पर उसे मार डालते.

लेकिन वे जरूर किसी के बच्चे थे. और वे भूखे थे.

भयानक खतरों के बावजूद, लुबा और उसके बैरक की महिलाओं ने इन अनाथों की देखभाल की - जिन्हें इतिहास में "डायमंड चिल्ड्रन" के रूप में जाना गया - और उन्हें सर्दियों में बीमारी, भुखमरी और युद्ध से बचाया.

लेखक का नोट

लुबा: बर्गन-बेल्सन यातना शिविर की परी की कहानी

लुबा ट्रिस्ज़िंस्का-फ्रेडरिक के जीवन के दौरान हुई वास्तविक घटनाओं पर आधारित है. पाठ में प्रयुक्त नामित व्यक्ति, तिथियां, स्थान और कविताएं वास्तविक हैं. कहानी को बेहतर ढंग से बताने के लिए संवाद और कुछ पात्र जोड़े गए हैं. होलोकॉस्ट (प्रलय) के दौरान, बर्गन-बेल्सन सहित, यातना शिविरों में कैदियों ने अनाथ बच्चों के कई अलग-अलग समूहों की देखभाल की थी. इस कहानी में बच्चे डच थे: उनके पिता एम्स्टर्डम के हीरे तराशने वाले थे, जिन्हें नाजी युद्ध के प्रयासों में मदद करने के लिए बर्गन-बेल्सन में स्थानांतरित कर दिया गया था. इन बेटों और बेटियों को "डायमंड चिल्ड्रन" के रूप में जाना जाने लगा.

प्रस्तावना

1930 के दशक में, "नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी" नामक एक राजनीतिक समूह जर्मनी में सत्ता में आया. जल्द ही नाज़ी पार्टी के रूप में जाने जाने के लिए, उन्होंने "यातना शिविर" नामक विशाल जेलों का निर्माण किया. जहां, पहले तो उन्होंने आम अपराधियों और उनकी राजनीति से असहमत लोगों को बंद किया. इसके बाद, नाजियों ने घोषणा की कि जो कोई भी उनके आदर्श से अलग था, जो नाजी नहीं था या जिसे वे "आर्यन" (गोरे बालों वाले, उत्तरी यूरोपीय मूल के नीली आंखों वाले कोकेशियान) कहते थे, वो सभी जर्मनी के दुश्मन थे. उन्होंने जिप्सियों, शारीरिक और मानसिक विकलांग लोगों, यहोवा, समलैंगिकों और यहूदी लोगों को गिरफ्तार किया और उन्हें भी यातना शिविरों में डाल दिया.

1938 में नाजी सैनिकों ने अन्य यूरोपीय देशों पर आक्रमण करना शुरू किया: ऑस्ट्रिया. चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, डेनमार्क, नॉर्वे, बेल्जियम, हॉलैंड, लक्जमबर्ग, फ्रांस, यूगोस्लाविया, ग्रीस और सोवियत संघ. द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था, और जैसे-जैसे नाजी सैनिक फैलते गए, उनके यातना शिविर पूरे यूरोप के यहूदियों और अन्य गैर-आर्यों से भर गए.

सालों तक, बाकी दुनिया ने नाजियों की बात पर विश्वास किया: कैदी "कार्य शिविरों" में थे जो जर्मनों को युद्ध जीतने के लिए आवश्यक चीजों का निर्माण कर रहे थे. लेकिन वहां कुछ बेहद बुरा चल रहा था. नाज़ी चुपके-चुपके अपने कैदियों को मार रहे थे.

हमारी कहानी इन्हीं यातना शिविरों में से एक पर आधारित है. दो जर्मन गांवों के बीच स्थित, इसे बर्गन-बेल्सन कहा जाता था. यह एक यहूदी नायिका - लुबा ट्रिस्ज़िंस्का की सच्ची कहानी है. "द एंजल ऑफ बर्गन-बेल्सन."

लुबा अपनी चारपाई में आंखें बंद करके लेटी थी. बाहर, रात ठंडी और चांदनी थी, फिर भी अंदर, तेज़ हवा वाले जेल बैरक ज्यादा गर्म नहीं थे. इस अजीब, नए शिविर में लुबा की वो पहली रात थी. उसका कोई घर नहीं था, कोई परिवार नहीं था, और सवालों ने उसकी नींद उड़ा दी थी: मैं अभी भी क्यों जीवित हूँ? मुझे क्यों बख्शा गया?

आधे सपने में, उसने अपने बेटे इसहाक को उसे बुलाते हुए सुना.

"माँ! माँ!" लेकिन वो जानती थी कि वो इसहाक नहीं था.

लुबा उठ बैठी. "क्या तुमने वो सुना?" उसने हर्मिन से फुसफुसा कर कहा. वो हर्मिन के साथ बंक-बेड साझा करती थी. "कुछ बच्चे रो रहे हैं."

"यह तुम्हारी केवल पहली रात है और तुम अभी से ही चीजें सुन रही हो?" हर्मिना ने आँखें मूँद लीं. "तुम सिर्फ सपने देख रही हो. सो जाओ. नाजियों को पागल लोग पसंद नहीं हैं, तुम यह बात अच्छी तरह जानती हो."

लुबा ने सोने की कोशिश की, लेकिन आवाजें लौट आईं, "माँ! माँ!"

कौन रो रहा था? वो बहुत आश्चर्यचकित हुई. लुबा ने अपने कंधों के चारों ओर एक पतला कंबल लपेटा और जमी हुई रात में बाहर घूमने चली गई.

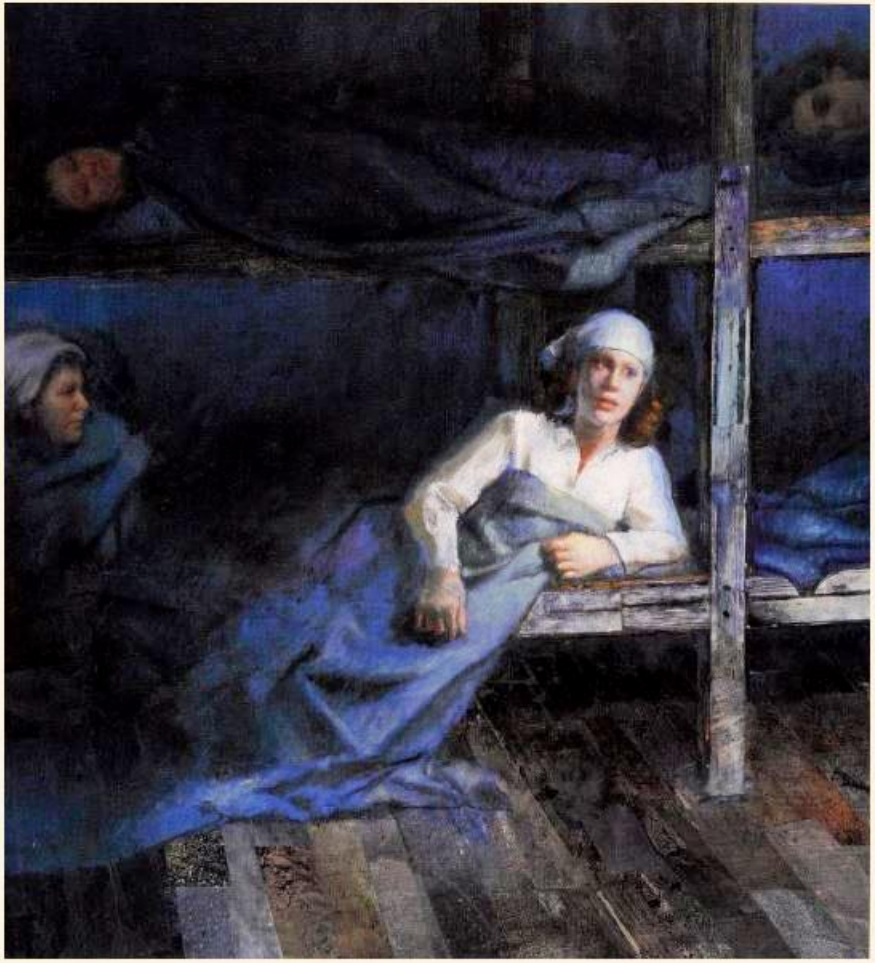

बाहर, वो बड़ी मुश्किल से ही बर्फ से ढकी जमीन देख सकती थी. लेकिन रोना उसे साफ सुनाई दे रहा था. रोने की आवाज़ उसे बैरक के पीछे एक खाली मैदान में ले गई. यहीं उसने उन्हें पाया: चौवन बच्चे खोई हुए बत्तखों की तरह एक साथ दुबके पड़े थे.

कुछ तो बस शिशु थे जिन्हें तकिए में लपेट दिया गया था.

"तुम्हारे माता पिता कहाँ है?" लुबा ने सबसे बड़े बच्चे से पूछा, जिसका नाम जैक था.

"जी वे ... चले गए," वो हकलाया. "वे उन्हें ले गए."

"तुम लोग यहाँ तक कैसे पहुँचे?"

"एक ट्रक में. मैंने ड्राइवरों को बात करते सुना ... वे हमें जंगल में ले जाने वाले थे और ..." जैक रुक गया और फिर अपने पैरों को देखने लगा.

"और क्या?" लुबा ने उससे आगे बोलने को कहा.

"और वे लोग हमें गोली मारने वाले थे," वो फुसफुसाया.

लुबा उस लड़के के पास पहुंची और उसने लड़के के बालों को तब तक सहलाया जब तक वो आगे नहीं बढ़ गया.

"फिर वहां लोगों में बहस हुई. ड्राइवर ने वैसा करने से मना कर दिया इसलिए उन्होंने हमें यहीं छोड़ दिया. उन्होंने कहा कि ठंड हमें वैसे भी मार देगी," जैक ने लुबा से कहा. "हमने पूरे दिन कुछ नहीं खाया है."

बाकी बच्चे लुबा को घूरते रहे और लुबा ने फिर से अपने मन में वही सवाल सुना: मुझे क्यों बख्शा गया? इस बार उसे लगा कि उसे उसका उत्तर पता था.

लुबा ने बच्चों के समूह को एक साथ इकट्ठा किया और बर्फ में अपने पैरों के निशानों के पीछे-पीछे वो उन बच्चों को वापस बैरकों में ले गई.

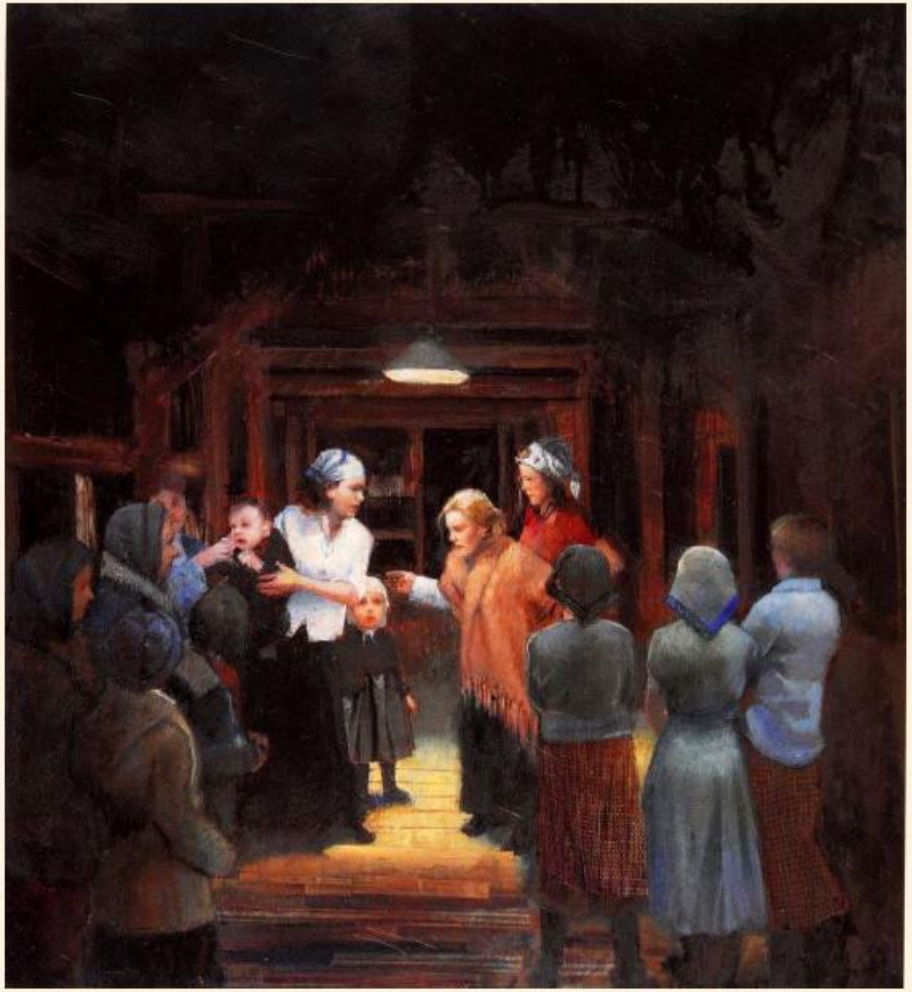

"तुम सच में पागल हो!" हर्मिना रो पड़ी.

अब तक सब लोग जाग चुके थे.

"हम उन्हें कहाँ रखेंगे?"

"हम उन्हें कैसे खिलाएंगे?"

लुबा ने उनके प्रश्नों का उत्तर स्वयं दिया: "क्या होता अगर वे तुम्हारे अपने बच्चे होते?"

एक अन्य महिला ने सहमति व्यक्त की, "क्या आप उनकी मदद करना नहीं चाहेंगे?"

"बेशक," दूसरों ने उत्तर दिया. "लेकिन अगर पहरेदारों को पता चला कि हम उन्हें रखा है तो वे हमें मार डालेंगे!"

महिलाएं काफी देर तक बच्चों को देखती रहीं. अंत में, एक बड़े कैदी ने चुप्पी तोड़ी, "आओ, बच्चों, एक बिस्तर ढूंढो."

शायद कुछ लोगों को याद था कि वो हनुक्का पर्व का वक्त था और उन्होंने अपने खोए हुए परिवारों के बारे में भी सोचा, क्योंकि उन्होंने भी बच्चों को धीरे से बुलाया. "हाँ, स्वागत है. स्वागत है."

पहले से ही भीड़भाड़ वाला कमरा, तीन चारपाई वाले बंक-बेड, लेटे हुए बच्चों से जल्दी ही भर गए. जब बाकी महिलाएं अपने नए मेहमानों को समेटने में व्यस्त थीं, लुबा ने एक लोरी गाई. एक-एक करके, बच्चों ने अपनी आँखें बंद कीं, और फिर हर बच्चा सो गया. सबसे बड़ी लड़की हेट्टी को छोड़कर बाकी सभी बच्चे सो गए.

"आपका कोई बच्चा हैं?" हेट्टी ने लुबा से पूछा.

"मेरा एक छोटा बेटा है," उसने जवाब दिया. "उसका नाम इसहाक है."

"वो कहाँ है?"

लुबा हिचकिचाई. "वो मुझे पता नहीं."

"उसे क्या हुआ?"

"इतनी छोटी लड़की के लिए यह बहुत सारे सवाल हैं," लुबा ने आह भरी, लेकिन वो उससे बात करती रही.

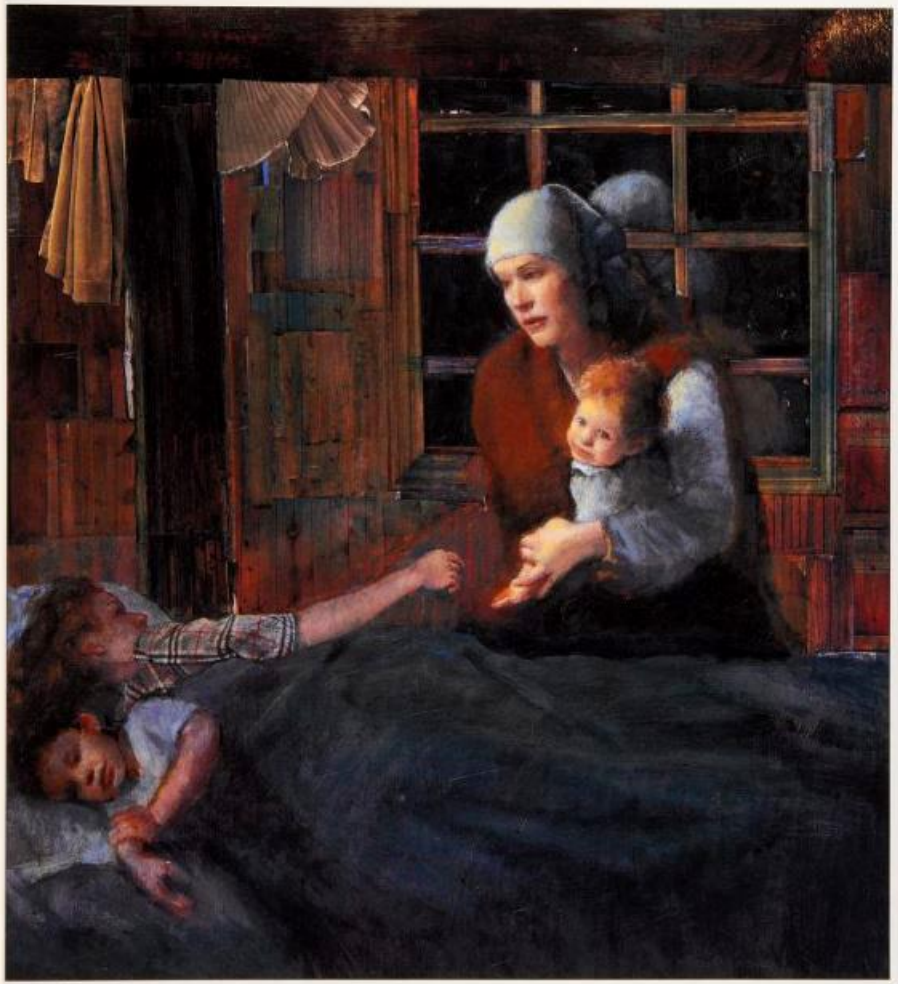

"युद्ध से पहले मैं पोलैंड में, रूसी सीमा के पास, अपने माता-पिता और अपने भाइयों और बहनों के साथ मैं एक फार्म पर रहती थी." लुबा अपने दिमाग में उन खेतों को देख सकती थी - गोभी और चुकंदर और गाजर, रसोई के बाहर उनका छोटा सा सब्जी का बगीचा था. फिर उसने अपनी आँखें मूँद लीं.

"जब मैंने शादी की, तब मेरे पति हर्शल और मैं पास के एक शहर में चले गए. वहाँ पर इसहाक का जन्म हुआ. हमारे पास बहुत सी चीजें नहीं थीं, लेकिन हम सभी एक-साथ बहुत खुश थे."

"फिर एक दिन नाज़ी सैनिक आए. वे हमें ऑशविट्ज़ के यातना शिविर में ले गए."

लुबा, हेट्टी को ट्रेन की सवारी के बारे में बताना नहीं चाहती थी. कैसे हर कोई फुसफुसा रहा था कि वे एक मौत के शिविर में जा रहे थे. वह हेट्टी को यह भी नहीं बताना चाहती थी कि जिस क्षण ट्रेन ऑशविट्ज़ पहुंची, हर्शल को पुरुषों के शिविर में ले जाया गया और गार्ड ने इसहाक को उसकी बाहों से छीन लिया. वो हेट्टी को यह भी नहीं बताना चाहती थी कि वो अभी भी उसे "माँ! मामा!" कहते हुए सुन सकती थी. भले ही इस हादसे को दो साल बीत चुके थे.

इसके बजाए, उसने हेट्टी को बताया. "मैं भाग्यशाली हूं. नाजियों का मानना है कि मैं एक नर्स हूं और उन्होंने मुझे उनके घायल सैनिकों की देखभाल में मदद करने के लिए यहां भेजा है." लेकिन आखिरकार लड़की की भी आंखें बंद हो गईं. "और अब देखो, मुझे किसी और के बच्चे मिल गए हैं."

अगली सुबह, चौवन पेट गड़गड़ा रहे थे, लेकिन लुबा वहां से गायब थी.

"वो कहाँ है?" बच्चे आपस में फुसफुसाए.

अचानक दरवाजा खुला. "जल्दी से, इसे लो," लुबा ने हर्मिना को एक भांप निकलता बर्तन देने के लिए बुलाया. कुछ सेकंड बाद में वो दूसरे बर्तन के साथ लौटी.

जैसे ही भूखे बच्चे इकट्ठे हुए, लुबा ने अपनी स्कर्ट से बर्तन के गर्म ढक्कन को खींचकर हटाया.

"दलिया!" उन्होंने आश्चर्य से कहा.

महीनों तक बच्चों ने ठंडे, पानी जैसे सूप के अलावा और कुछ नहीं खाया था. वो सूप फफूंदीदार गाजर और पार्सनिप के टुकड़ों से बना था.

महिलाओं ने सिर हिलाया और देखा कि बच्चे आखिरी चम्मच तक चाट चुके थे. लुबा ने वो कैसे किया? वहां तो एक व्यक्ति के लिए भी अतिरिक्त भोजन मिलना असंभव था. उसने पचास से ज्यादा भूखे बच्चों के लिए भोजन कैसे जुगाड़ किया? निश्चय ही वो एक चमत्कार था.

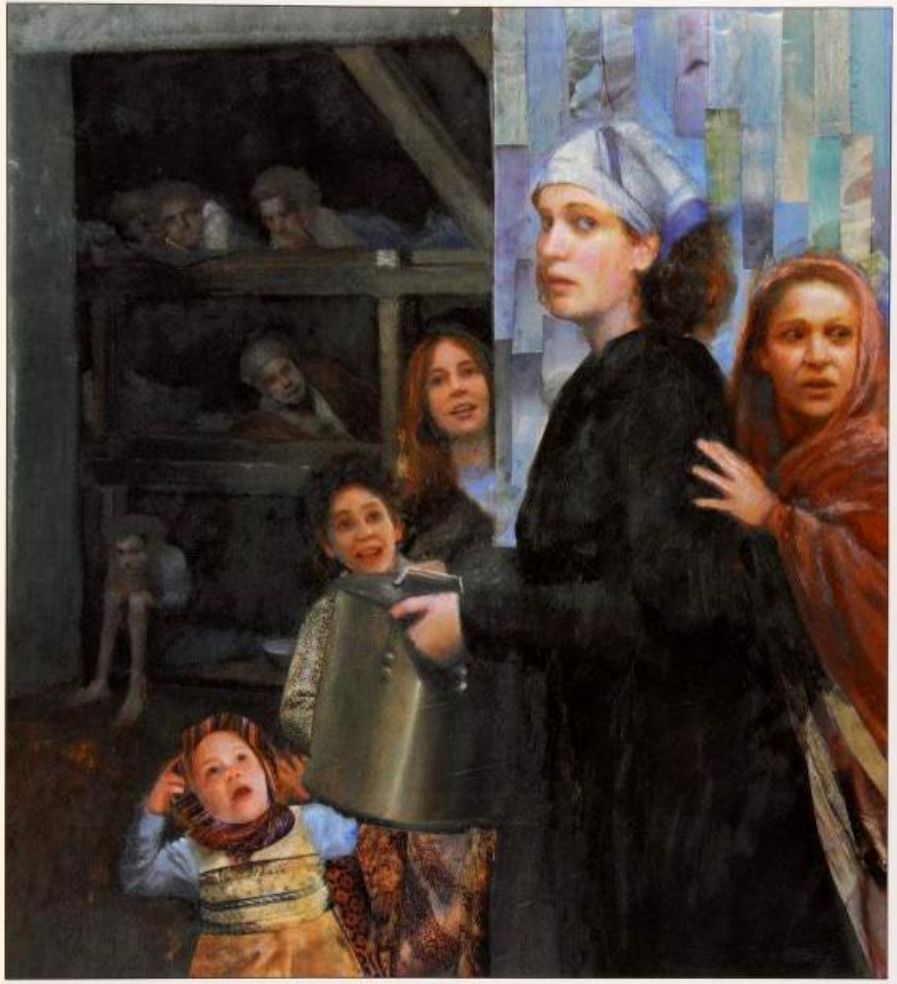

वो एक चमत्कार था जिसे लुबा ने उस सर्दी में महीनों तक किया. बच्चों के लिए भोजन प्राप्त करने के लिए. लुबा को दिन में दो बार कैंप से होकर किचन क्षेत्र तक पैदल जाना पड़ता था. और हर बार लुबा को उस फाटक से गुजरना पड़ता था जिस पर नाजी सैनिकों का पहरा होता था.

यातना शिविरों में बंद सभी कैदियों में से यहूदियों के साथ सबसे बुरा व्यवहार किया जाता था. अधिकांश को बिना अनुमति के कहीं भी जाने की मनाही थी. लेकिन लुबा जैसी नर्सों को कैंप में घूमने-फिरने की थोड़ी आजादी थी. सौभाग्य से, लुबा की वर्दी की आस्तीनों ने नाजियों द्वारा टैटू किए गए नंबरों को छिपा दिया था. उस टैटू से उसकी पहचान एक यहूदी के रूप में होती. और चूंकि गार्डों ने यह मान लिया था कि वो सुंदर नर्स, जो धाराप्रवाह जर्मन और रूसी बोलती थी, ज़रूर एक राजनीतिक कैदी होगी, इसलिए उन्होंने उस पर ज़्यादा शक नहीं किया.

फिर भी, उस सैर के दौरान लुबा घबरा गई. उसने प्रार्थना की कि वे उसके हाथों की जाँच न करें और उसे खाली हाथ बैरक में वापस न भेजें.

"गुड मॉर्निंग," लुबा ने गार्डों का अभिवादन किया, और मुस्कुराते हुए उनके पास से जाने का इंतज़ार करने लगी.

"जाओ," गार्डों ने उत्तर दिया, और उन्होंने लुबा को गेट में से जाने दिया. कभी-कभी वे उसे देखकर वापस मुस्कुराते भी थे.

"धन्यवाद," लुबा ने कहा. उसने अपने काँपते हाथों को छिपाने के लिए उनसे बाय-बाय कहा.

एक बार किचन के अंदर पहुँचने पर लुबा सबसे पहले बेकरी का दौरा करती थी. कैदियों को केवल बची-बासी, आधी-अधूरी रोटियां ही दी जाती थीं. लेकिन रोटी बनाने में मदद करने वालों में एक महिला यहूदी कैदी भी थी.

"क्या आज तुम्हारे पास मेरे बच्चों के लिए रोटी नहीं है?" लुबा ने महिला से पूछा. बर्गन-बेल्सन के कई कैदी लुबा के बच्चों के बारे में जानते थे लेकिन उन लोगों पर भरोसा किया जा सकता था कि वे नाजी गार्डों को उनका रहस्य नहीं बताएँगे. लेकिन बच्चों का खाना छिपा कर ले जाना ज्यादा खतरनाक मामला था.

महिला ने सिर हिलाया और बड़बड़ाया. "तुम इन बच्चों की परवाह क्यों करती हो? वे बच्चे तुम्हारे तो नहीं हैं."

"लेकिन वे किसी के बच्चे तो हैं," लुबा ने उसे याद दिलाया, "और वे बहुत भूखे हैं."

फिर उस महिला ने लुबा को दो गर्म डबलरोटियां दीं जिसे लुबा ने अपने कोट में छिपाया और फिर वो मुस्कुराई.

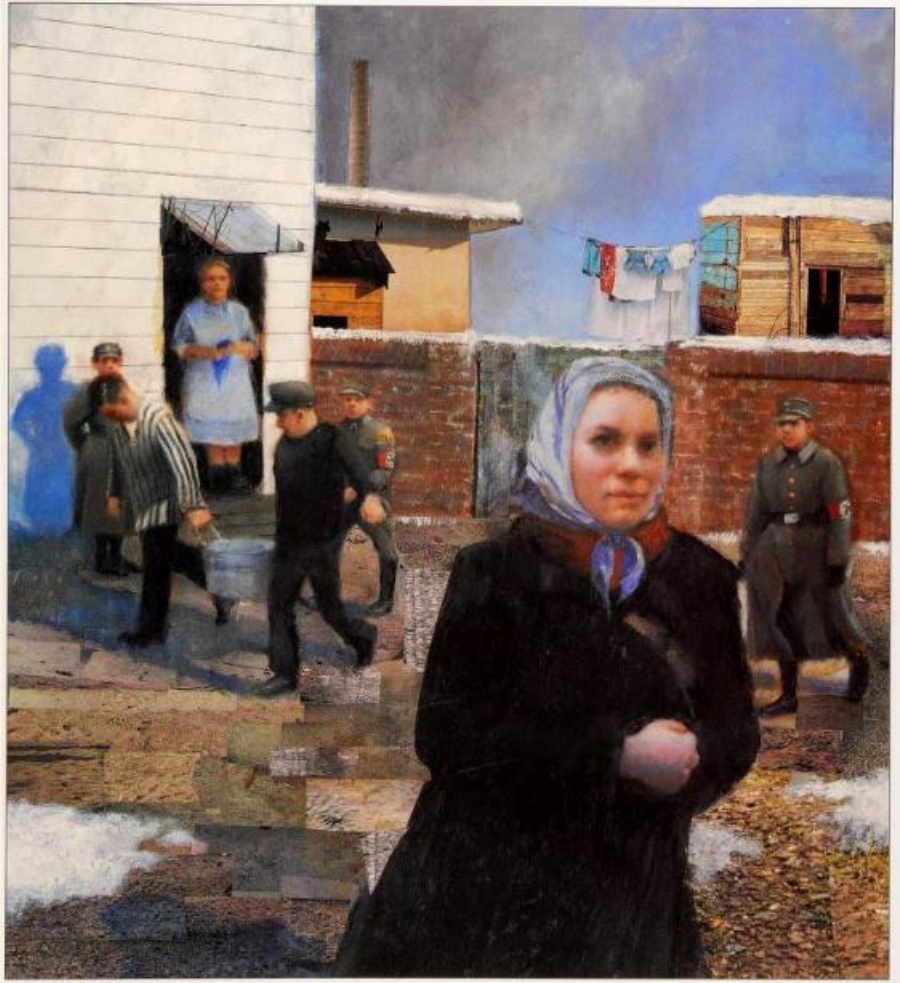

फिर लुबा एक अन्य इमारत में एक रूसी राजनीतिक कैदी जो वहां कसाई था से मिलने जाती थी. वो गार्डों के लिए मांस तैयार करता था. उसके यहूदी नहीं होने के कारण मदद मांगने से लुबा कुछ घबराई हुई थी, लेकिन लुबा के बच्चों ने महीनों से मांस नहीं खाया था.

"असंभव!" उस बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया. "मैं तुम्हें सॉसेज नहीं दे सकता. अगर मैं पकड़ा गया तो गार्ड मुझे मार डालेंगे - और तुम्हें भी!"

"लेकिन कॉमरेड," लुबा ने रूसी में निवेदन किया, "मैं आपको वचन देती हूं - अगर वे मुझे पकड़ते हैं, तो मैं उन्हें बताऊंगी कि मैंने वो मांस चुराया था."

कसाई ने एक पल के लिए सोचा, फिर उसने सिर हिलाया. "नहीं, यह बहुत बड़ा जोखिम है."

'ठीक है, मुझे लगा कि तुम एक दादा होगे और तुम्हारे भी नाती-पोते होंगे," लुबा ने आह भरी, और वो जाने के लिए मुड़ी, "लेकिन मुझसे गलती हुई. अगर तुम दादा होते तो कभी किसी और के पोते-पोतियों को भूखा नहीं मरने देते."

उसके बाद कसाई गुस्से से काँपते हुए लुबा के पास से होता हुआ दरवाजे से बाहर निकल गया.

लेकिन जब लुबा वहां से चली, तो उसने देखा कि सलामी (मांस) की एक बड़ी छड़ी एक डिब्बे के पीछे बंधी हुई थी. वो कसाई भी आखिर एक दादा था.

लुबा ने सॉसेज को अपने उभरे हुए कोट के अंदर छिपाया.

अंत में, लुबा रसोइए के पास जाती थी जो बर्गन-बेल्सन में भोजन का प्रभारी था. लुबा के लिए उसका सामना करना सबसे कठिन था. वो एक जर्मन था, जिसे किसी पुराने अपराध के लिए वहां बंद किया गया था, और उसे यहूदी कैदी उतने ही नापसंद थे जितना गार्डों को. अगर वो अपने नाजी सुपरवाइजर को लुबा के बारे में सूचना देता, तो लुबा को मार दिया जाता.

"क्या आपके पास मेरे बैरक में कुछ छोटों के लिए थोड़ा सा आलू का सूप नहीं होगा?" लुबा ने उससे विनती की.

"देखो, यहाँ किसी के लिए अतिरिक्त सूप नहीं है!" रसोइए ने जोर से हंसते हुए कहा. "मैं तुम्हारे गंदे यहूदी बच्चों के लिए कुछ सूप क्यों दूं?"

लुबा बहुत गुस्से में थी और वो जाने के लिए मुड़ी, लेकिन रसोइए ने उसे बुलाया, "तुम बहुत बहादुर हो. तुम्हें देखकर मुझे अपनी पत्नी की याद आती है."

लुबा ने कहा, "निश्चित रूप से तुम्हारी पत्नी मुझे सूप देती, क्यों?"

रसोइया फिर हँसा और उसने लुबा के गाल को प्यार से नोचा. "जब तुम गुस्से में होती हो तब तुम और भी बहादुर लगती हो. ओह! उन्हें सूप दे दो! मुझे उनकी क्या परवाह?" और यह कहकर उसने आखिरी सूप लुबा के बर्तन में डाल दिया.

लुबा अपने चेहरे से उसका हाथ झिड़क कर दूर करना चाहती थी, लेकिन उसकी बजाए वो मुस्कुराई और उसने बर्तन को अपने जादुई कोट के अंदर छिपा लिया.

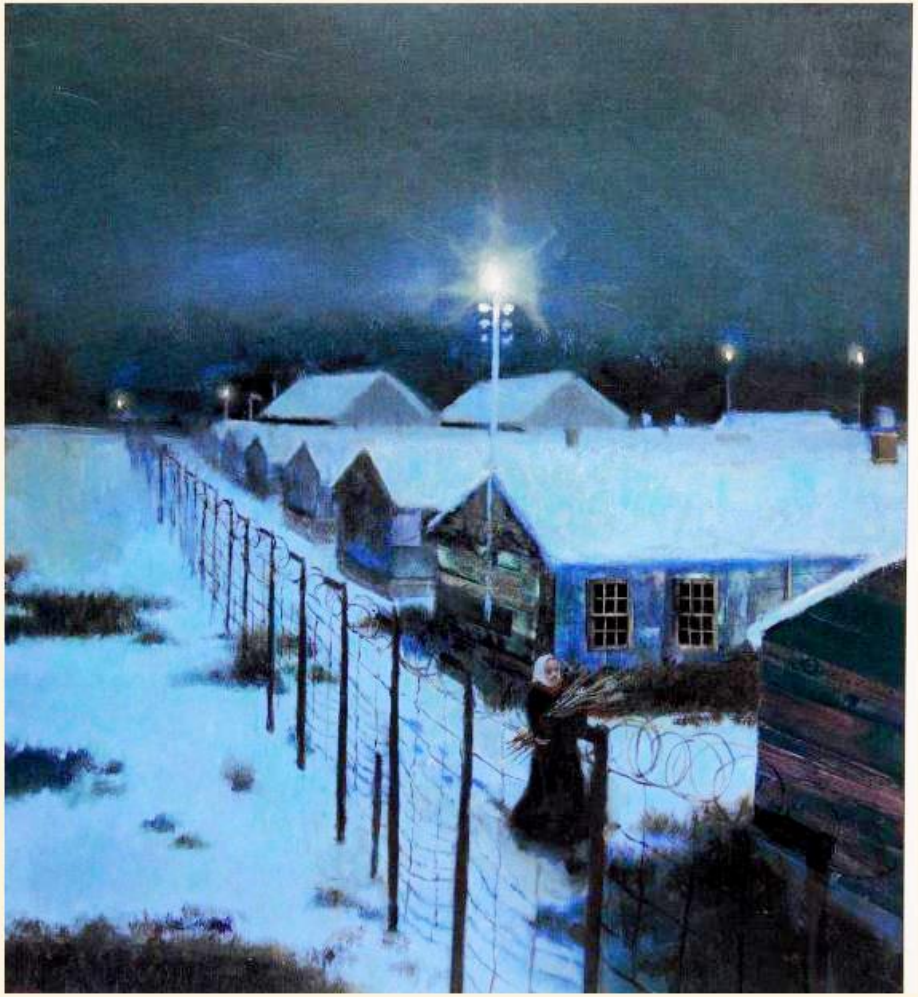

शिविर के चारों ओर की खाली इमारतों में से, लुबा पुरानी लकड़ी का स्क्रैप एकत्र करती थी. जब बहुत ठंड होती, तो वो बच्चों को गर्म करने के लिए चूल्हे में आग जलाती थी, लेकिन वो अंधेरा होने के बाद ही ऐसा करती थी जब कोई धुआं नहीं देख पाता था.

कभी-कभी लुबा, गार्ड की पत्नियों को मना लेती और उनसे अतिरिक्त कपड़े और कंबल ले लेती थी. लुबा ने उन्हें इसका कारण कभी नहीं बताया, और अगर उन्हें लुबा के बच्चों के बारे में पता भी था तो भी उन्होंने किसी से एक शब्द भी नहीं कहा.

जब कभी बच्चे बीमार पड़ते, तब लुबा मदद के लिए एक यहूदी डॉक्टर के पास जाती थी. एस्पिरिन और पट्टियों के अलावा उसके पास बहुत कुछ नहीं होता था, लेकिन वो पर्याप्त था.

बच्चों को जो चाहिए था, लुबा ने उसे कहीं न कहीं से ले आती थी. हर दिन वो बच्चों कोई जिंदा रखने के लिए अपनी जान जोखिम में डालती थी. उसे बस यह उम्मीद थी कि उसके बेटे इसहाक के लिए भी कहीं कोई ऐसा ही कर रहा होगा.

बैरक की अन्य महिलाओं ने भी बच्चों की देखभाल में अपनी भूमिका निभाई. उन्होंने लुबा के लाए खाने को पकाया और सबसे छोटे बच्चों को तैयार किया. उन्होंने चौवन बच्चों को जितना हो सका साफ रखने के लिए एक गीले कपड़े का इस्तेमाल किया.

बच्चों ने भी इसमें मदद की. बच्चों ने छोटे-मोटे काम किए, एक-दूसरे को कहानियाँ सुनाईं, नाटकों का अभिनय किया, और अनजान देशों की यात्रा की. लेकिन वे कभी रोए नहीं. उनमें से कोई भी उस ठंडे, अंधेरे इलाके में उन्हें छोड़े जाने की घटना को कभी नहीं भूला.

हर दिन के अंत में, बच्चे दरवाजे के चारों ओर इकट्ठा होकर लुबा का इंतजार करते थे, प्रार्थना करते थे कि वो कहीं पकड़ी न जाए.

और हर बार जब लुबा दरवाजे से अंदर घुसती, अपनी खोज से थककर, तो बच्चे फुसफुसाते, "सिस्टर लुबा! तुम वापस आ गईं! तुम वापस आ गईं!" फिर जब वे लुबा के थके हुए पैरों को रगड़ते, तो लुबा की ताकत फिर से वापस आ जाती थी, और उसे फिर से याद आता कि उसकी जान क्यों बक्शी गई थी.

जैसे-जैसे दिन गर्म होते गए और वसंत नजदीक आता गया, बच्चों ने लुबा के लिए जन्मदिन पर एक आश्चर्यजनक योजना बनाना शुरू कर दी.

बर्गन-बेल्सन में कुछ कैदी ऐसे थे जो विशेष वस्तुओं का व्यापार कर सकते थे - डबलरोटी के लिए आभूषण, दवाओं के लिए सिगरेट. सौभाग्य से, एक ऐसा डच कैदी था जिसके पास वो था, जो बच्चे चाहते थे, लेकिन वो चीज़ सस्ती नहीं थी - उसकी कीमत दो पूरी डबलरोटियां थीं.

"हमें डबलरोटियां कहाँ से मिलेगी?" जैक ने आह भरी.

"मेरे दिमाग में एक आईडिया है," हेट्टी फुसफुसाई. "लेकिन उसमें सभी को अपना योगदान देना होगा."

हेट्टी जानती थी कि एक डबलरोटी में सत्रह स्लाइस होते थे. और हर दिन लुबा बैरक में प्रत्येक बच्चे को रोटी का एक स्लाइस देती थी.

यदि हेट्टी और जैक बच्चों को अपनी दैनिक डबलरोटी का आधा टुकड़ा देने के लिए मनाने में सफल होते, तो वे केवल दो रातों में लुबा का उपहार खरीद सकते थे. बाकी बच्चों को वो एक शानदार योजना लगी, और जल्द ही उनके पास डबलरोटी के स्लाइस का ढेर लग गया. हालाँकि उनका पेट खाली था, लेकिन बच्चे इतने उत्साहित थे कि उन्हें उसका ध्यान ही नहीं रहा.

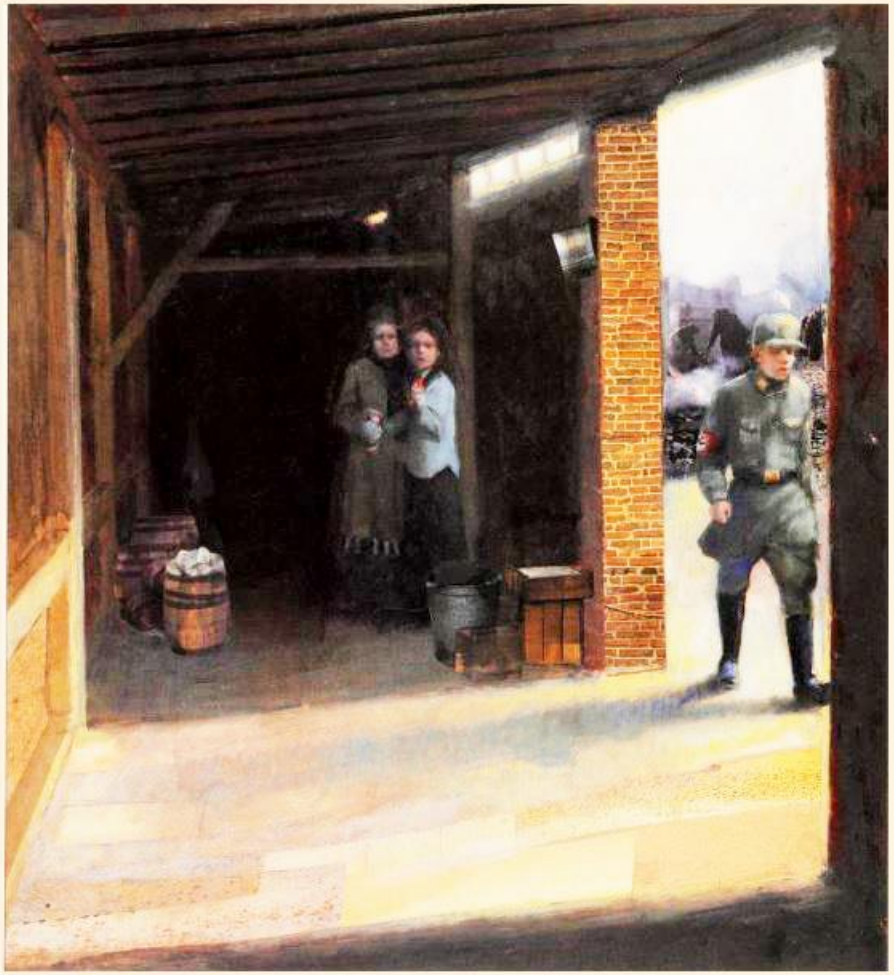

"आश्चर्य!" बच्चे चिल्लाए जब लुबा ने दरवाज़ा खोला.

"यह सब क्या है?" लुबा ने पूछा. लुबा अपने सामने साफ़-सुथरे और गुलाबी चेहरों को देखकर चकित रह गई.

"आज आपका जन्मदिन है!" जैक ने कहा.

लुबा को अपना जन्मदिन याद भी नहीं था. उसने बिना किसी सफलता के भोजन की तलाश में घंटों बिताए थे और उसे डर था कि वो रात सभी के लिए एक भूखी रात होगी.

सभी बच्चे लुबा के सामने लाइन में खड़े थे, प्रत्येक ने लुबा को एक छोटा सा उपहार दिया - छोटी-छोटी चीजें, जो उन्होंने कागज और कपड़े के टुकड़ों, धागों और लकड़ी के टुकड़ों से खुद बनाई थीं. कतार में आखिरी लड़की ने लुबा को दिल के आकार का एक बक्सा दिया जो हेट्टी के फ्रॉक के नीचे के कटे कपड़े में लिपटा हुआ था. लुबा ने ढक्कन उठाया.

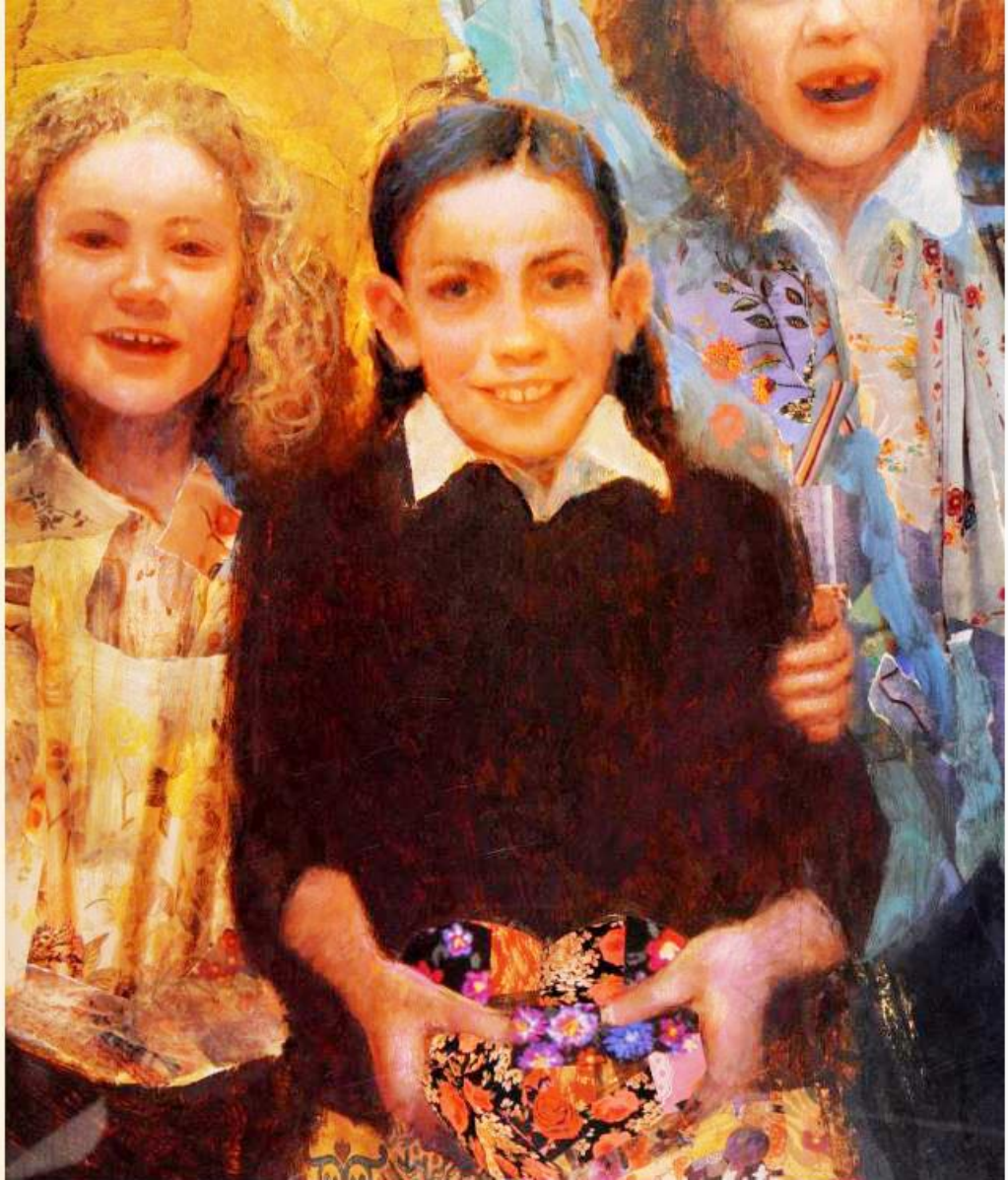

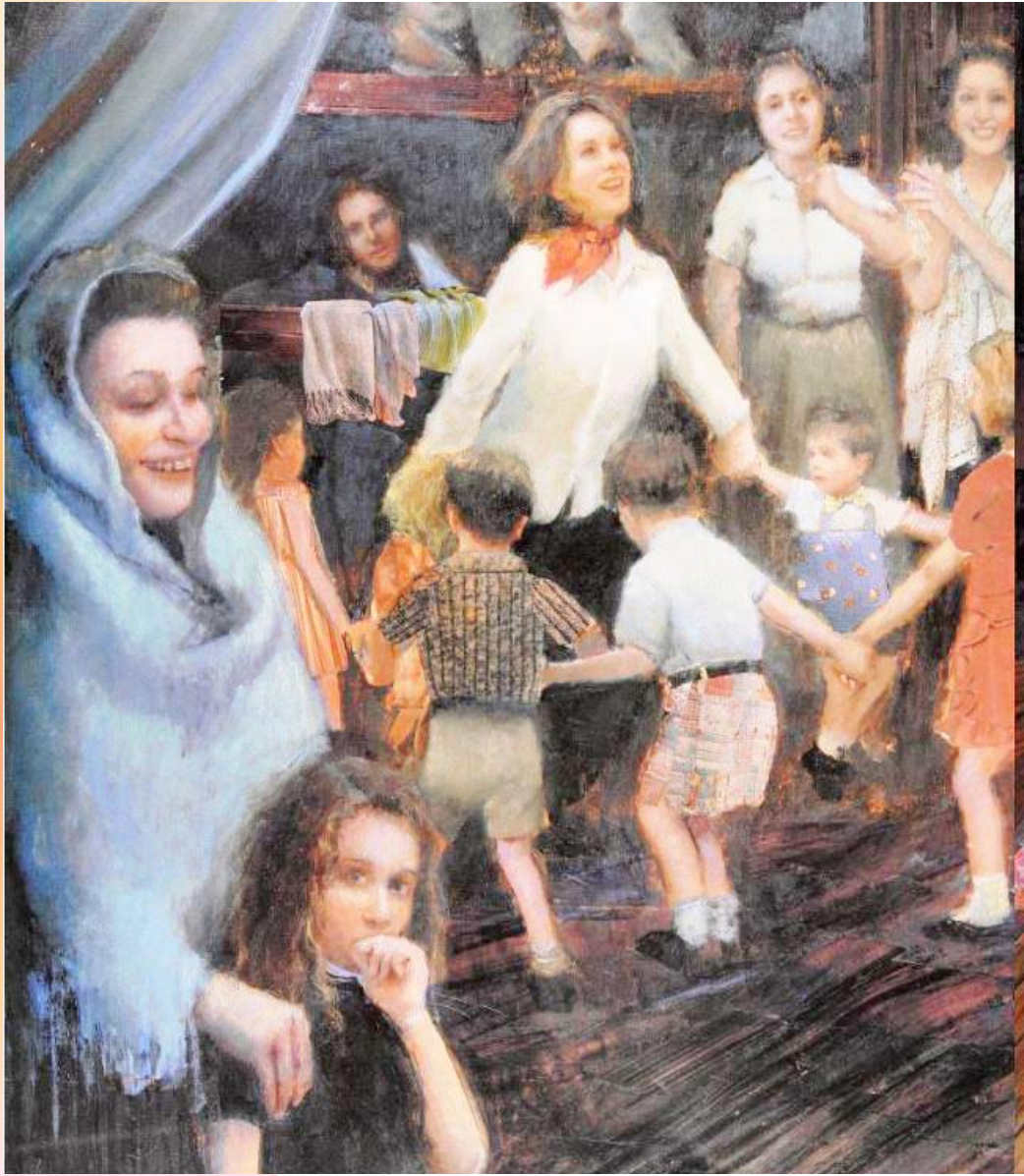

अंदर लुबा को एक लाल रेशमी दुपट्टा मिला. "यह तो बेहद सुंदर है," लुबा ने कहा, लेकिन वो अंतिम उपहार नहीं था. जैसे ही हेट्टी ने कागज का एक टुकड़ा खोला, कमरा एकदम शांत हो गया. "यह वो जन्मदिन की कविता है जो हमने आपके लिए लिखी है:

बहन लुबा, आपका नाम किसी दस्ताने की तरह फिट बैठता है.
आपके लिए हमारे दिलों में सम्मान और ढेरों प्यार है.
सुबह से देर रात तक
एक बार भी आप हमें अपनी नजरों से ओझल नहीं होने देती हैं.
दिन शुरू भी नहीं होता है
और सिस्टर लुबा पहले से ही फरार हो जाती है.
हमारी जान उनके हाथों में है,
यह हम भली-भांति जानते हैं.
और हम सभी उनके आभारी हैं, बड़े और छोटे.
हम आपके लिए स्वास्थ्य और खुशी की कामना करते हैं.
काश, हम सभी के लिए आजादी जल्दी आए."

लुबा के सिर में अब कोई आवाज नहीं थी. कोई सवाल भी नहीं था. जब से वे इसहाक को ले गए थे, पहली बार लुबा जीवित बचकर खुश थी.

हालांकि लुबा की यह खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिकी. अफवाहें उड़ रही थीं: नाज़ी युद्ध हार रहे थे. यह खबर कैदियों के लिए खुशी की बात थी, लेकिन पहरेदारों के लिए नहीं, जो अब उनके साथ पहले से भी बदतर व्यवहार करने लगे थे. कैदियों को बहुत कम खाना मिलता था. उनके पास कोई दवा नहीं थी.

हर दिन बच्चे अधिक-से-अधिक भूख रहने लगे, फिर एक समय आया जब वे अपनी भूख को महसूस तक नहीं कर सके. और जल्द ही उनमें से कई बच्चे बीमार पड़ गए.

एक शाम लुबा ने बैरक के चारों ओर देखा. बच्चे कितने दुबले-पतले हो गए थे. कई बच्चे टाइफाइड से पीड़ित थे. वो एक ऐसी बीमारी थी जिसने पहले ही हजारों कैदियों को मार डाला था. टाइफाइड के तेज बुखार ने उन्हें इतना थका दिया कि वे उठ भी नहीं सकते थे. यहां तक कि जो बच्चे बीमार नहीं थे वे भी चारपाई पर लेटे थे, क्योंकि वे खेलने के लिए बहुत कमजोर थे. इस दर पर, वे शायद एक और सप्ताह ज़िंदा बचते.

"अब मैं क्या करूं?" लुबा ने चिंतित होकर कहा.

"दीदी लुबा, प्लीज़ रो मत," जैक ने कहा. "चिंता मत करो," उसने लुबा के कंधों के चारों ओर अपनी पतली बांह लपेटते हुए कहा. "हम लोग ज़रूर ज़िंदा रहेंगे."

"मुझे पता है कि हम इस मुसीबत से ज़रूर उबरेंगे जैक. मुझे पता है कि हम ज़िंदा रहेंगे." लेकिन लुबा को इतना यकीन नहीं था.

अगली सुबह लुबा एक अजीब सी आवाज़ के साथ उठी. गड़गड़ाहट? क्या एक और हवाई हमला? लुबा ने धक्का देकर बैरक का दरवाजा खोला. शिविर पूरी तरह सुनसान था. पहरेदार चले गए थे, और शिविर के प्रवेश द्वार में से बड़े-बड़े टैंक अंदर घुस रहे थे.

क्या मैं कोई सपना देख रही हूँ? लुबा ने सोचा.

तभी, हरेक टैंक के ऊपर लगे लाउडस्पीकरों ने ऐलान किया, "अब तुम आज़ाद हो! अब सभी लोग आज़ाद हैं!" ब्रिटिश सेना आ चुकी थी. युद्ध समाप्त हो चुका था.

"बच्चों, उठो!" लुबा रोई.

ब्रिटिश सैनिकों ने लुबा के दरवाजे में झांककर देखा तो उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ. अंधेरे बैरक के अंदर उन्होंने देखा कि कुछ महिला कैदी बच्चों के झुंड से घिरी हुई थीं. बंक-बेड में बच्चे थे, मेज़ों के नीचे बच्चे थे, जो अपनी यूनिफॉर्म को खींच रहे थे.

उसके बाद बच्चों ने सैनिकों को अपनी काली, धँसी हुई आँखों और मुस्कान से देखा जो कि पूरे शिविर को रोशन कर सकती थीं.

सैनिक चकरा गए. "ये सभी बच्चे युद्ध से कैसे बच निकले?"

वो निश्चय ही एक चमत्कार था.

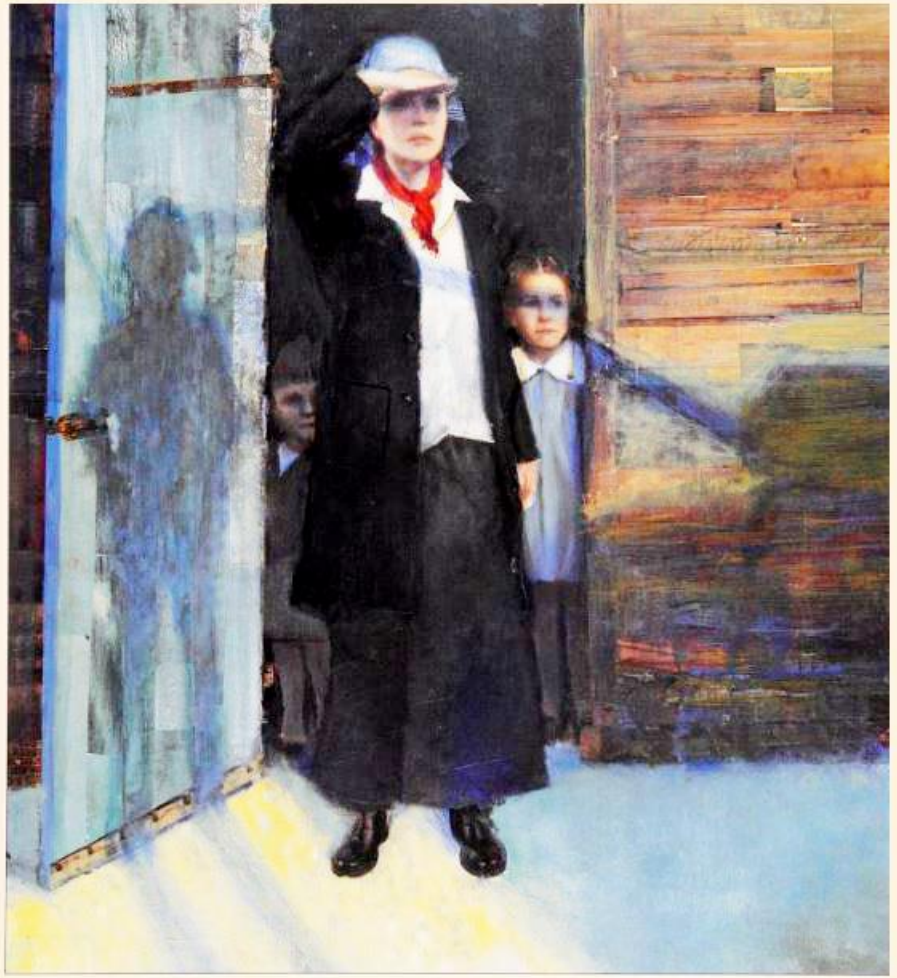

अब लुबा को अपने जादुई कोट की कोई जरूरत नहीं थी. जैसे ही लुबा ने कोट को उतारा, सूरज ने उन बाहों को गर्म किया जिन्हें अब उन्हें छिपाने की ज़रुरत नहीं थी. लुबा और अन्य महिलाओं ने सबसे कमजोर बच्चों को उठाया, जबकि मजबूत बच्चों ने उनकी स्कर्ट पकड़ी.

"अब हम स्वतंत्र हैं," लुबा ने कहा कि वे कांटेदार तारों के पार और बिना पहरेदार वाले गेट के माध्यम से बाहर निकले. "अब हम स्वतंत्र हैं."

उपसंहार

बर्गन-बेल्सन में आखिरी महीनों के दौरान साठ हजार से अधिक कैदियों की भूख और बीमारी से मृत्यु हो गई थी. फिर भी मूल 54 डच बच्चों में से जिन्हें लुबा ने 1944 में दिसंबर की उस ठंडी रात में बचाया था, 52 बच्चे अप्रैल 1945 में युद्ध के अंत तक जीवित रहे.

मुक्ति के बाद, बच्चों ने लुबा से अलग होने से इनकार कर दिया, इसलिए वो उन्हें हॉलैंड ले गईं. जब तक वे वहां पहंचे, तब तक लुबा एक राष्ट्रीय हीरोइन बन चुकी थीं. डच लोगों ने उन्हें "बर्गन-बेल्सन का दूत" कहा. बच्चों को उनके जीवित परिवारों के साथ फिर से मिला दिया गया और रानी विल्हेल्मिना ने खुद लुबा को हॉलैंड में रहने के लिए आमंत्रित किया, यह वादा करते हुए कि जीवन भर उनकी देखभाल की जाएगी. लेकिन लुबा वहां रुकी नहीं. एक बार जब डच बच्चे सुरक्षित हो गए, तो लुबा बर्गन-बेल्सन लौट आईं. वो वहां पर अन्य अनाथ बच्चों की देखभाल में मदद करना चाहती थीं जिन्हें युद्ध के अंत में वहां स्थानांतरित कर दिया गया था और वो अपने खुद के रिश्तेदारों को भी ढूंढना चाहती थी. पूरे यूरोप में युद्ध से बचे लोग शरणार्थी शिविरों में रह रहे थे. वे अपने घर, अपनी नौकरी और अपनी सारी संपत्ति खो चुके थे. जबकि लुबा निश्चित थीं कि हर्शल और इसहाक मर चुके थे, उन्हें आशा थी कि इन शरणार्थी शिविरों में से किसी एक में उन्हें अपने परिवार के अन्य सदस्य मिल सकते थे.

जब बर्गन-बेल्सन के शेष अनाथ बच्चों को अन्य देशों में स्थानांतरित किया गया, तो लुबा एक समूह को स्वीडन में एक शरणार्थी शिविर में ले गईं.

बर्गन-बेल्सन की मुक्ति के दिन "डायमंड बच्चों" के साथ लुबा
(ऊपर की पंक्ति में बाएं से दूसरी).

लेकिन काफी खोजबीन के बाद भी लुबा अपने किसी अन्य जीवित रिश्तेदार को नहीं खोज पाईं।, इसलिए 1947 में वो अमेरिका चली गईं. वहाँ, उन्होंने एक और होलोकॉस्ट के अनुभव झेले आदमी सोल फ्रेडरिक से शादी की, और उनके दो बच्चे हुए - आल और पार्टी. फिर भी लुबा अब भी रोज़ाना उन डच बच्चों के बारे में ही सोचती थीं. वे कैसे कर रहे थे? क्या उन बच्चों ने कभी लुबा को याद किया? सालों तक लुबा ने उन बच्चों से कुछ नहीं सुना.

लेकिन वे बच्चे लुबा को नहीं भूले थे. जैसे ही वे थोड़े बड़े हुए, उन बच्चों ने लुबा को दुनिया भर में खोजना शुरू किया. जैक ने सबसे पहले लुबा को ढूंढा और बाद के सालों में कुछ अन्य बच्चों ने भी लुबा को ढूंढ निकाला. जैसे ही दूसरे युद्ध की समाप्ति की पचासवीं वर्षगांठ निकट आई, उन्होंने लुबा को एक और आश्चर्य देने की व्यवस्था की.

अप्रैल 1995 में, वे एक पुनर्मिलन के लिए लुबा को एम्स्टर्डम लेकर गए. तब लुबा लगभग पचहत्तर वर्ष की थीं, और उनके "बच्चे" 50-60 साल के थे. लेकिन जैसे ही लुबा विमान से बाहर उतरीं उनके बीच के साल पिघल गए. वो उनकी लुबा थीं, और वे उनके बच्चे थे.

एक बार फिर, बच्चों ने लुबा के लिए एक बहुत ही खास उपहार की योजना बनाई. वे लुबा को सिटी हॉल में ले गए. टेलीविजन कैमरों, पत्रकारों, एम्स्टर्डम के मेयर और बच्चों से हाल भरा हुआ था. हॉलैंड की महारानी बीट्रिक्स ने लुबा को बर्गन-बेल्सन में उनके वीर कार्यों और मानवीय सेवाओं के लिए "सिल्वर मेडल ऑफ ऑनर" से सम्मानित किया. लुबा को वो लगभग पिछले सम्मान - लाल दुपट्टे जितना ही पसंद आया!

वहां पर एक और आश्चर्य हुआ. टेलीविज़न कवरेज के कारण अमेरिका में एक परिवार ने भी लुबा के बारे में सुना. उस परिवार को लुबा का नाम जाना पहचाना लगा, इसलिए उन्होंने लुबा को फोन किया. लुबा के साथ फोन पर घंटों बात करने के बाद, उन्हें पता चला कि वे लोग लुबा के दादा के रिश्तेदार थे. युद्ध के कई लम्बे वर्षों के बाद लुबा अपने परिवार के खोए कुछ लोगों से दुबारा मिल पाई.

लुबा के गृहनगर जैतोविया सहित द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत में यूरोप.

द्वितीय विश्व युद्ध और प्रलय

1939 से 1945 तक पूरे यूरोप और प्रशांत महासागर में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया, लेकिन यहूदी लोगों का उत्पीड़न वर्षों पहले शुरू हुआ. 1933 में, एडॉल्फ हिटलर और उनके अनुयायियों ने जर्मनी में सत्ता संभाली और यहूदी लोगों को देश की समस्याओं के लिए बलि का बकरा बनाया. हिटलर ने जर्मन लोगों से कहा कि वे तभी सफल हो सकते हैं जब यहूदियों को नष्ट कर दिया जाए. बहुतों ने उस पर विश्वास किया. उन्होंने जल्दी ही अपने यहूदी पड़ोसियों के लिए जीवन जीना लगभग असंभव बना दिया: उन्होंने यहूदी घरों और व्यवसायों को नष्ट कर दिया, यहूदी संपत्ति को चुरा लिया, और अंततः यहूदियों को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें यातना शिविरों में भेज दिया. जब जर्मन सेना ने अन्य यूरोपीय देशों पर आक्रमण किया, तो उन देशों के यहूदी नागरिकों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया.

युद्ध के अंत तक नाजियों ने साठ लाख यहूदी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को "होलोकॉस्ट" में मार डाला था.

अकेले बर्गन-बेल्सन के अंदर पैंतीस हजार से अधिक यहूदी कैदियों की मृत्यु हो गई, जिसमें प्रसिद्ध किशोर लेखका ऐनी फ्रैंक भी शामिल थी (वो शिविर की मुक्ति से कुछ हफ्ते पहले टाइफाइड से मर गई थी). वास्तव में, बर्गेन-बेल्सन में हालात इतने भयानक थे कि मुक्त होने के बाद भी तेरह हजार कैदियों की बीमारी से मृत्यु हो गई. अंत में पूरे शिविर को जला देना पड़ा क्योंकि वो टाइफाइड से ग्रस्त था.

लुबा की तरह, होलोकॉस्ट के कई यहूदी बचे हुए लोग दुनिया भर में, संयुक्त राज्य अमेरिका में बस गए. वे दक्षिण अमेरिका, कनाडा और हाल ही में स्थापित यहूदी राज्य इज़राइल में चले गए. अपने नए घरों में, इन बचे लोगों ने ख़ाक से अपने जीवन का पुनर्निर्माण किया. उनका साहस अब भी मानवता के लिए एक प्रकाश है, यह दर्शाता है कि ताकत, गरिमा और आशा सबसे अंधेरी जगहों में भी जड़ें जमा सकती हैं.

मेरी मां ने हमेशा मुझसे कहा कि उन्होंने मुझे जन्म दिया, लेकिन लुबा ने मुझे जीवन दिया.

-स्टेला डेगन-फर्टिग (लुबा द्वारा बचाई सबसे छोटी बच्ची)

मेरा नाम लुबा ट्रिस्ज़िंस्का-फ्रेडरिक है और यह मेरी कहानी है. मैंने कभी भी खुद को एक विशेष रूप से बहादुर व्यक्ति के रूप में नहीं सोचा, निश्चित रूप से मैं कोई हीरोइन नहीं हूँ. लेकिन मैंने पाया कि हर इंसान के अंदर एक हीरो होता है जो उभरने का इंतजार करता है. मेरी कई नायकों ने मदद की. उनकी मदद के बिना मैं कुछ भी नहीं कर पाती. यह कहानी उनके लिए और बच्चों के लिए है.

-लुबा ट्रिस्ज़िंस्का-फ्रेडरिक